राज्यस्तरीय समाजशास्त्रीय शोध संगोष्ठी

"छत्तीसगढ़ में समाजशास्त्र : स्थिति, भूमिका एवं चुनौतियाँ"

"SOCIOLOGY IN CHHATTISGARH : STATUS, ROLE & CHALLENGES"

19 दिसम्बर 2011

छत्तीसगढ़ सोशियोलॉजिकल एसोसिएशन

एवं

समाजशास्त्र विभाग

डी.पी.विप्र महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

Scanned with CamScanner

छत्तीसगढ़ : उच्च शिक्षण संस्थानों में समाजशास्त्र की स्थिति

(गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर के संदर्भ में)

डॉ. आभा त्रिपाठी, विभागाध्यक्ष – समाजशास्त्र
शासकीय जे.पी. वर्मा स्नातकोत्तर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय बिलासपुर (छ.ग.)

छत्तीसगढ़ राज्य में स्नातक स्तर पर छात्रों द्वारा चुने जाने वाले विषयों में समाजशास्त्र मुख्य विषय के रूप में लोकप्रिय रहा है। आश्चर्यजनक रूप से प्रमाणित सत्य यह है कि इसमें विद्यार्थियों की बढ़ती हुई संख्या इस बात का प्रतीक है कि विद्यालयों में इस विषय को नहीं पढ़ने के बावजूद इसके प्रति विद्यार्थियों की जिज्ञासा व रूचि है। वे मुख्य विषय के रूप में समाजशास्त्र का चयन करते हैं। बी.ए. भाग एक के विद्यार्थी सत्रांत तक विषय परिवर्तन कर समाजशास्त्र में आते रहते हैं।

प्रतियोगी परीक्षाओं में मुख्य चयनित विषय के रूप में अपनी सार्थकता सिद्ध करने वाले इस विषय के साथ विडम्बना यह है कि गुरू घासीदास विश्वविद्यालय में यह विभाग नहीं है। विश्वविद्यालय की स्थापना का इतिहास तो 28 वर्ष पुराना है। सन् 1984 में गुरू घासीदास विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। प्रथम कुलपति श्री शरत चन्द्र बेहार जी के समय में विभिन्न विषयों में (जिसमें समाजशास्त्र भी था) प्राध्यापक/सहायक प्राध्यापक पदों की भर्ति हेतु विज्ञापन भी प्रकाशित हुआ। लेकिन आवेदन आमंत्रित कर लेने के बाद साक्षात्कार स्थगित होते–होते अतीत की बात होकर रह गया। जिसकी भरपाई विषय के छात्र व जुड़े हुये लोग अब तक कर रहे हैं।

अत्यंत खेद का विषय है कि गुरू घासीदास विश्वविद्यालय में समय–समय पर विभिन्न विषयों के विभाग तो खुले पर इस लोकप्रिय विषय के खुलने की संभावना तक पर विचार नहीं हुआ। कितनी हास्यास्पद बात है कि किसी भी महाविद्यालय में कला संकाय के खुलने पर प्रारंभिक विषयों के रूप में समाजशास्त्र भी मुख्य विषय रहता है, वहाँ हमारे अपने विश्वविद्यालय में स्थापना के तीन दशक बीत जाने पर भी इसे नजरअंदाज किया गया। यह शायद हम सबकी कमजोरी है कि छात्रहित में इस विषय की स्थापना की मांग जोर–शोर से नहीं कर पा रहें है।

बिलासपुर शहर के महाविद्यालयों में समाजशास्त्र में एम.ए. नियमित विद्यार्थियों के लिये सर्वप्रथम 1983 में प्रारंभ हुआ। शहर के दो प्रमुख महाविद्यालयों में शासकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय एवं डी.पी.विप्र महाविद्यालय में प्रथम बैच एम.ए. नियमित विद्यार्थियों के लिये समाजशास्त्र में शुरू हुआ। इस बैच ने एम.ए. पूर्व रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर एवं एम.ए. अंतिम गुरू घासीदास विश्वविद्यालय से अंकसूची प्राप्त की। इस प्रथम बैच के अधिकांश छात्रों ने किसी न किसी शासकीय/अशासकीय महाविद्यालयों में सहायक प्राध्यापक के पद पर नौकरी प्राप्त की। आज इनमें से अनेक प्राध्यापक, प्राचार्य एवं अन्य क्षेत्रों में विभिन्न पदों पर कार्यरत हैं। यह इस बात को प्रमाणित करता है कि नियमित अध्ययन के अवसर, विद्वत गुरूजनों के मार्गदर्शन (प्रो. शचि सप्रे, प्रो. दमयंती ठाकुर, प्रो. सुबोध शर्मा, प्रो. के.बी. सिंह) एवं मिलने वाली शैक्षणिक सुविधाओं ने अनगिनत प्रतिभाओं को जन्म दिया। सोचने की बात है कि ये अवसर विश्वविद्यालयीन स्तर पर मिलता अगर समाजशास्त्र विभाग वहां होता तो राष्ट्रीय स्तर पर भी न जाने कितने इतिहास रचे जाते हालाकि समाजशास्त्र को विश्वविद्यालयीन धरातल नहीं मिल सका फिर भी महाविद्यालयीन स्तर पर ही सही छात्रों ने कई उपलब्धियां हासिल की। गुरूजनों ने राज्य स्तर पर विषय को नई पहचान दी।

समाजशास्त्र से जुड़ी महान विभूतियों ने भी महत्वपूर्ण दायित्व व पद पूरी गरिमा से संभाले हैं। स्थानीय महाविद्यालय से प्रो. दमयंती ठाकुर का चयन म.प्र. P.S.C. के सदस्य के रूप में हुआ। प्रो. के.बी. सिंह छ.ग. P.S.C. के परीक्षा नियंत्रणक नियुक्त हुये।

प्रो. शचि सप्रे गुरू घासीदास की स्थापना के साथ ही लगातार तीन बार विषय विशेषज्ञ के रूप में चयनित हुई। डॉ. अभिलाषा सैनी को उनकी पुस्तक के लिये राष्ट्रीय अवार्ड मिला।

P.S.C. में चयनित होने वाले अधिकांश समाजशास्त्र विषय वाले रहे हैं। यह भी गौरव का विषय है कि कला संकाय के विषयों में गुरू घासीदास विश्वविद्यालय ही नहीं छ.ग. के सभी विश्वविद्यालयों में सर्वाधिक शोध उपाधि पाने वाले सर्वाधिक शोध छात्र समाजशास्त्र विषय वाले ही रहे हैं। इतनी उपलब्धियों के बाद भी विश्वविद्यालय द्वारा समाजशास्त्र उपेक्षित विषय ही रहा। छात्रहित में इस विषय को विश्वविद्यालय में खोलने पर गौर किया जाये।

(प्रथम बैच के छात्र की कलम से) आभा त्रिपाठी

Scanned with CamScanner

Vol.- II, Issue -I ,
January-March 2014 :
V.L. RNI: CHHBIL00907/33/1/2013-TC
ISSN- 2347-8926

SOCIOLOGICAL QUEST

[A NATIONAL QUARTERLY BILINGUAL(HINDI & ENGLISH) RESEARCH JOURNAL OF SOCIOLOGY AND OTHER SOCIAL SCIENCES]

Recognised by Chhattisgarh Sociological Association

Scanned with CamScanner

SOCIOLOGICAL QUEST

Vol.- II, Issue -I , January-March 2014 : V.L. RNI: CHHBIL00907/33/1/2013-TC ISSN- 2347-8926

CONTENT

	Subject	Page No.
1.	वनग्रामवासियों के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक जीवन पर शासकीय योजनाओं का प्रभाव डॉ0 दिवाकर सिंह राजपूत डॉ0 सुमन ठाकुर	9
2.	**Tribal Health and Interventionist role of Non-Governmental Organization (N.G.O.'s)** Dr. Anup Kumar Singh	20
3.	" सामाजिक विकास में ऊर्जा स्त्रोत : संदर्भ म.प्र. " डॉ. गौहर हुजेफा खान	26
4.	गढ़वाल हिमालय की टोंस उपत्यका के पशुचारकों का जनजीवन पूरन चन्द्र पैन्यूली कगडियाल सुशील कुमार	31
5.	**HIGHER EDUCATION AND WOMEN'S CONTRIBUTION TO GROWTH AND DEVELOPMENT** **Dr. Rita Ghosh (Guin)**	41
6.	**The Impact of Globalization on English Literature** **Dr. Ram Pal Yadav**	49
7.	जनजातियों में विधिक जागरूकता का समाजशास्त्रीय अध्ययन जे.के.मेहता	53
8.	**MIGRATION, SLUMS AND URBAN POVERTY** Dr. (Smt.) Chandana Mitra	65
9.	महिलाओं एवं बच्चों की तस्करी तथा मानवाधिकार प्रो. भावना कमाने डॉ. आभा त्रिपाठी	73
10.	डंगचगा नाचा : एक समाजशास्त्री अध्ययन डॉ. अंजु शुक्ला एवं स्वाती शर्मा	77
-	**Information to contributors**	82
-	सूचना	84

Scanned with CamScanner

महिलाओं एवं बच्चों की तस्करी तथा मानवाधिकार

प्रो. भावना कमाने
डॉ. आभा त्रिपाठी

नारी ईश्वर का वरदान है, उसकी महत्ता को किसी भी समाज में नकारा नहीं जा सकता है। समाज के सृजन का श्रेय नारी को है। इसका समाज निर्माण में अमूल्य योगदान रहा है। नारी के पास प्रकृति प्रदत्त कुछ ऐसे गुण है, जो केवल नारी को प्राप्त है।

माँ, पत्नी व पुत्री के रूप में वह समय-समय पर सेवा भावना व बलिदान से समाज की सेवा करती आई है। लेकिन फिर भी इस पुरुष अधिशासित समाज में नारी को तिरस्कृत किया जाता है। नारी को अपमानित, शोषित व उपेक्षित किया जाता है, उसको मारा-पीटा जाता है। उसकी उपेक्षा की जाती है। उसकी मूलभूत आवश्यकता की पूर्ति में बाधा पहुंचाई जाती है, उसको भूखा रखा जाता है।

उनके साथ छेड़छाड़, बलत्कार, दहेज प्रताड़ना, मानव तस्करी जैसी अत्याचार किये जाते है। महिलाओं के साथ होने वाले अत्याचार महिलाओं की स्थिति को और शोचनीय कर दिये है। वर्तमान में नारी की स्थिति और खराब होती जा रही है। महिलाओं और बालिकाओं की तस्करी का उद्योग तेजी से हो रही है, भारत सरकार की ओर से कराये गये सर्वेक्षण से यह तथ्य सामने आया हे कि देश भर में लगभग 30 लाख सेक्स वर्कर है, जिनमें से अधिक महिलाएं और बच्चे भारत के वैश्यालयों में रहते है। तस्करी के शिकार बच्चों एवं महिलाओं को दास के समान रखा जाता है। इनके साथ घातृक शारीरिक शोषण, बलत्कार, कठोर प्रताड़ना और नियमित शोषण इनकी जीवन शैली है।

सीमा पर महिलाओं और बच्चों की तस्करी के बारे में अनुमान यह है कि लगभग 25 से 30 हजार महिलाएँ एवं बच्चे तस्करी से यहां आ रहे हैं। उनमें सबसे ज्यादा संख्या बांग्लादेश एवं नेपाल से आने वालों की है। जब कि सार्क देशों में भारत तस्करी का मुख्य केन्द्र बन गया है। भारत के आर्थिक एवं राजनैतिक संबंधों ने महिलाओं की तस्करी को बढ़ावा दिया है। नौकरी एवं उच्च वेतन का प्रलोभन से तस्करों के हाथ में पहुचाते हैं और एक बार उनके चुंगल में फसने पर वहां से निकलना संभव नहीं है। किसी भी देश की राजनीतिक संरचना भी तस्करी के लिए उत्तरदायी होती है।

भारत में मानव मानव तस्करी की समस्या दुनिया के कई देशों के मुकाबले गंभीर है। हाल ही में अमेरिका ने अपने रिर्पोट में कहा है कि भारत को अगले महीने तक निगरानी के तहत रखा जाने वाले देशों की श्रेणी में रखा जायेगा।

भारत के ग्रामीण क्षेत्रों की यह स्थिति और भी भयानक है । बढ़ते शहरीकरण के परिणाम स्वरूप ग्रामीणों को शहरों की ओर पलायन ने भोले-भाले ग्रमीणों को भी इस तस्करी का शिकार बनाया हैं।

नवगठित राज्य छत्तीसगढ़ भी मानव तस्करी में पीछे नहीं है। यह राज्य आदिवासी बाहुल्य क्षेत्रों में आता है। इन क्षेत्रों में भोले-भाले आदिवासी बालिकाओं एवं महिलाओं को तस्करी इस क्षेत्र में तीव्र गति से हो रही है। आर्थिक लाभ, नौकरी के लालच में जन जातियों की महिलाओं की हाल को और अधिक बुरा कर दिया है। इन महिलाओं एवं बालिकाओं के साथ होने वाले अपराध का यह परिवार अपनी मजबूरियों के चलते विरोध नहीं कर पाता है। यही कारण है कि यहाँ की महिलायें अपराध का अधिक शिकार होती है। राज्य में जशपुर, सरगुजा, बस्तर से महिलाओं, बालिकाओं एवं बालकों की तस्करी तीव्र गति से हो रही है। इस तस्करी के अपराध में संलग्न मानव इन्हे तथा इनके माता पिता को पैसों का लालच एवं नौकरी का झांसा देकर उन्हे दिल्ली, मुंबई, कर्नाटक जैसे महानगरों में बेच रहे हैं। यह व्यापार छत्तीसगढ़ में तीव्र गति से फल-फूल रहा है। बड़े महानगरों में बालिग एवं नाबालिग युवक युवतियों शोषण का शिकार हो रही हैं।

Scanned with CamScanner

RNI : CHHBIL/2010/36213
ISSN 0975-8771
Vol.-II Issue-I January to March 2011

Educational Waves

A National Research Journal

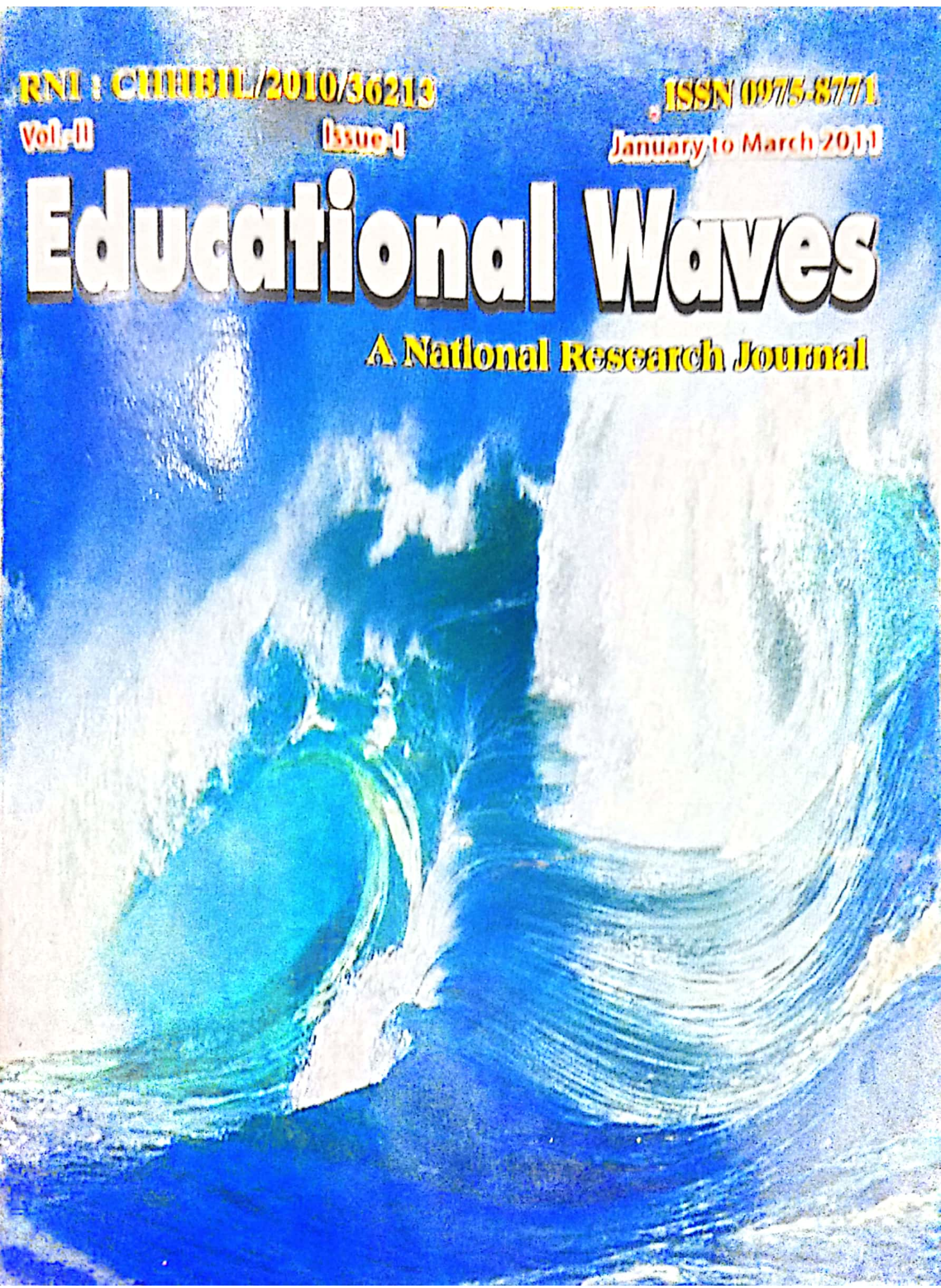

Scanned with CamScanner

CONTENTS

Subject	Page No.
✧ काव्य गुण संपन्न कहानीकार – 'अज्ञेय' * डॉ० सुनीता मिश्रा	75-76
✧ अनुसूचित जाति एवं जन–जातीय बालक–बालिकाओं के स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन * डॉ. (श्रीमती) ममता अवस्थी ** सबीना खातुन	77-79
✧ "बाल श्रम उन्मूलन के संदर्भ में भारतीय संविधान का कार्य निष्पादन" (कोरबा जिले के संदर्भ में) * डॉ. एच.पी. खैरवार ** डॉ. अविनाश कुमार लाल *** सर्वेश कुमार सिंह	80-83
✧ बिलासपुर जिले में जल संसाधन की उपलब्धता एवं संरक्षण * डॉ. अनिल कुमार ** डॉ. के. आर. मतावले	84-87
✧ महिला सशक्तिकरण: महिलाओं के सामाजिक उत्थान के संदर्भ में * डॉ. (श्रीमती) एच. आर. आगर ** श्रीमति फेदोरा लकड़ा	88-90
✧ छत्तीसगढ़ के जलप्रपात : भविष्य के प्रमुख पर्यटक स्थल * डॉ जयसिंग साहू	91-93
✧ "छत्तीसगढ़ में परिवर्तित सामाजिक आदर्श एवं मानवाधिकार" * डॉ. दुर्गा बाजपेयी ** श्रीमती शारदा दुबे	94-95
✧ छत्तीसगढ़ के आदिवासी समूह में उरांव जनजाति की स्थिति का मूल्यांकन * डॉ. सीमा पान्डेय	96-97
✧ सामाजिक समस्याएं कारण, प्रभाव एवं निवारण" "नवीन एवं नवविकसित सामाजिक समस्याएं" * डॉ. क्षमा त्रिपाठी ** श्रीमती स्वाती जाजू	98-100

Subject	Page No.
✧ सूफीमत का उद्भव और आधार * निखिल घोरे	101-105
✧ महिलाओं के साथ घरेलू हिंसा का व्यापक जाल * डॉ. सतीश अग्रवाल ** डॉ.(श्रीमती) व्ही. सेनगुप्ता	106-108
✧ "भू–जल संवर्धन हेतु वर्षा जल का संरक्षण 21 वीं सदी का अनिवार्य नैतिक एवं सामाजिक उत्तरदायित्व" * डॉ. दुर्गा बाजपेयी ** डॉ. आभा त्रिपाठी	106-108
✧ छत्तीसगढ़ी के लोकगीत * डॉ. फूलदास महंत	109-110
✧ वर्तमान समाज में निर्धनता एक चुनौती * डॉ. राजभानु पटेल	111-114
✧ "उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के आक्रामकता स्तर का तुलनात्मक अध्ययन" * प्रज्ञा यादव	115-116
✧ खेलों में भागीदारी का छात्र–छात्राओं की नैराश्य को नियंत्रित करने की क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन * डॉ. शारदा कश्यप ** डॉ. सी.डी. आगाशे *** डॉ. संतोष बाजपेयी	117-119
✧ म. प्र. के जबलपुर शहर में पर्यावरण प्रदूषण एक भौगोलिक विश्लेषण (सर्वेक्षित छः वार्डों का एक प्रतीक अध्ययन) * डा. एस.आर. कमलेश ** डा. श्रीमती किरण गजपाल *** डा. श्रीमती सीमा द्विवेदी	120-125
✧ प्रतीकात्मक नाटक सृष्टि : अंधो का हाथी शोध सारांश * डा. अनसूया अग्रवाल	126-130

Scanned with CamScanner

58

www.shodh-prakalp.com

SHODH-PRAKALP

A Quarterly Research Journal

शोध-प्रकल्प

त्रैमासिक शोध पत्रिका

Vol. LVIII Yr. 17
Jan-March.2012

Editor
Dr.Sudhir Sharma
Email- shodhprakalp@gmail.com

Scanned with CamScanner

ISSN 097-6459

SHODH-PRAKALP

A Quarterly Research Journal

शोध-प्रकल्प

त्रैमासिक रिसर्च जर्नल

संपादक

डॉ. सुधीर शर्मा

अंक 39, संख्या : 2
अप्रैल-जून 2007

VOLUME XXXIX Number 02
April-June 2007

Scanned with CamScanner

शोध-प्रकल्प

अंक 38, वर्ष-12, संख्या-1, जनवरी-मार्च, 2007

SHODH-PRAKALP

Volume XXXVIII, year-12, No.-1, January-March, 2007

Contents

अनुक्रम

1.	Social Facilitation, Inhibition and Loafing at Individual and Group Tasks in Presence and No-Presence conditions	Radha Rani Sahoo, Dr. B.G. Singh	5
2.	The Importance of Nutrition, Fitness & Sports for a Working Child	Dr. Kailash Sharma, Dr. Reshma Lakesh	13
3.	Changes at Menopause	Mrs. S.R. Peter	15
4.	Eliot & Indian Scriptures	Smita Misra	19
5.	अण्मान तथा निकोबार की सम्पर्क भाषा-हिन्दी	डॉ. उषा सिंह	22
6.	हिन्दी : सामाजिक प्रयोजन के क्षेत्र प्रयोजनमूलक हिन्दी	डॉ.नीलिमा शर्मा	24
7.	कृत्रिम ज्ञान	डॉ. एच. के साहू	26
8.	छत्तीसगढ़ में पंचायत राज में किए गए अभिनव प्रयास	आरती तिवारी, प्रमोद यादव	29
9.	भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश - आशंकायें एवं सावधानियाँ	डॉ. रमाकांत अग्रवाल, डॉ. श्रीमती नीलम अग्रवाल	32
10.	कार्पोरेट गवर्नेंस और भारतीय बैंकिंग	डॉ. ओमप्रकाश गुप्ता, डॉ. एस.पी.कश्यप डॉ. ए.के. विश्वकर्मा, जी.पी. गुप्ता	35
11.	स्वतंत्र भारत में राज्यपालों की प्रवृत्तियाँ	श्रीकान्त प्रधान, डॉ. सुभाष चंद्राकर	39
12.	आदिवासियों के विकास में आदिम जाति विकास विभाग की भूमिका-एक अध्ययन	डॉ. ज्ञानेन्द्र कुमार शुक्ला	43
13.	औद्योगिक विकास के प्रभाव एवं पर्यावरण	डॉ. पापिया चतुर्वेदी, डॉ. एम.एस.पटेल	46
14.	भारतीय संविधान और मानव अधिकार	प्रो. बी. के. पटेल, डॉ. डी.आर. लहरे	50
15.	जांजगीर-चांपा जिले में साक्षरता एक भौगोलिक अध्ययन-डभरा तहसील के विशेष संदर्भ में	डॉ. सी.पी. नन्द	53
16.	किशोरों में मादक द्रव्य व्यसन की समस्या एक समाजशास्त्रीय अध्ययन	अभिजीत भौमिक, डॉ. आभा त्रिपाठी	57
17.	महाराष्ट्र के आदिवासी कमजोर वर्ग के बालकों का गिरता स्वास्थ्य स्तर	डॉ. डी. एन. सूर्यवंशी, श्रीमती आरती तिवारी	59
18.	छत्तीसगढ़ की पत्रकारिता में महिलाओं का योगदान	डॉ. सविता मिश्रा	61

टीप : शोध-प्रकल्प में प्रकाशित शोधपत्रों और आलेखों में व्यक्त विचार या तथ्यों से संपादक/संपादक मंडल की सहमति अनिवार्य नहीं है उनके लिए लेखक ही उत्तरदायी हैं .

Scanned with CamScanner

RNI NO. 58703/91

सामाजिक सहयोग

राष्ट्रीय त्रैमासिक शोध पत्रिका

अंक 62-63
अप्रैल-जून 2007
जुलाई-सित. 2007

SAMAJIK SAHYOG

NATIONAL QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

Published by : Research Management Syndicate
Shri Krishna Shikshan Sansthan,
C-3/10, L.I.G., Rishi Nagar, Ujjain (M.P.)

प्रकाशक : शोध प्रबंधन अभिषद, श्रीकृष्ण शिक्षण संस्थान, उज्जैन (म.प्र.)

Scanned with CamScanner